

## नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

मध्य प्रदेश की विकास-यात्रा इन दिनों एक निर्णायक मोड़ से गुजर रही है। ग्वालियर की धरती से शुरू हुई 'अभ्युदय मध्य प्रदेश ग्रोथ समिट' केवल एक आर्थिक आयोजन भर नहीं, बल्कि सुशासन और परिणाम केंद्रित प्रशासनिक सोच का प्रतीक बनकर उभरी है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन पर आयोजित इस कार्यक्रम ने यह संदेश दिया है कि प्रदेश अब विकास को चुनौती दे रहा है, बल्कि शासन की प्राथमिक प्रतिबद्धता के रूप में स्थापित कर रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जिस गति, नीतिगत स्पष्टता और प्रशासनिक अनुशासन के साथ विकास मोडल आगे बढ़ रहे हैं, वह मध्य प्रदेश को एक कृषि-प्रधान राज्य से उभरते औद्योगिक पावरहाउस की ओर ले जाता दिखाई देता है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की मौजूदगी ने इस समिट को राष्ट्रीय महत्व प्रदान किया। इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि केंद्र और राज्य का उबल-उड़न इन दोनों के बीच बढ़कर नीति,

## अभ्युदय : मध्य प्रदेश के सुशासन मॉडल की नई रफ्तार

निवेश और क्रियान्वयन का संयुक्त ढांचा बन चुका है। 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव, औद्योगिक परियोजनाओं की शुरुआत और रोजगार सृजन के आश्वासन इस बात का संकेत हैं कि विकास का प्रवाह अब क्षेत्रीय संतुलन के साथ आगे बढ़ रहा है। विशेष रूप से ग्वालियर, चंबल अंचल, जिसे कभी पिछड़े क्षेत्र के रूप में देखा जाता था, आज लॉजिस्टिक्स, मैन्युफैक्चरिंग और नई औद्योगिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में नई पहचान गढ़ रहा है।

दरअसल डॉ. मोहन यादव की शासन शैली में कुछ तत्व स्पष्ट रूप से उभरते हैं, तेज निर्णय प्रक्रिया, डिजिटल मॉनिटरिंग, पारदर्शी अनुमोदन प्रणाली और परिणाम आधारित मूल्यांकन। इसी के साथ फाइल मूवमेंट से लेकर परियोजना ट्रैकिंग तक ई-गवर्नेंस का उपयोग निवेशकों और

नागरिकों, दोनों के लिए भरोसे का वातावरण चुका है। यह वही सुशासन की भावना है, जिसकी वकालत अटल जी ने की थी कि जहां सत्ता सेवा का माध्यम बने और नीतियां कामगार पर नहीं, जमीन पर दिखें।

जाहिर है प्रदेश की अर्थव्यवस्था अब एक क्षेत्र पर निर्भर नहीं है। खाद्य प्रसंस्करण, ऑटो-कंपोनेंट, रक्षा विनिर्माण, फार्मा सेक्टर, लॉजिस्टिक्स, मैन्युफैक्चरिंग और नई औद्योगिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में नई पहचान गढ़ रहा है।

यह कहना जल्दबाजी होगी कि सारी चुनौतियां खत्म हो गई हैं। निवेश प्रस्तावों को वास्तविक रोजगार में बदलना, क्षेत्रीय असमानताओं को न्यूनतम करना और नदीकण्ठीय ऊर्जा और वेयरहाउसिंग, इन सभी क्षेत्रों में विस्तार यह दर्शाता है कि निवेश का लक्ष्य केवल आकड़ों की बढ़ोतरी नहीं, बल्कि उत्पादन, मूल्य संवर्धन और स्थानीय रोजगार सृजन है। परंतु युवाओं के लिए कोशल विकास और उद्योग के लिए नीति स्थिरता, यह संयोजन मध्य प्रदेश को निवेश, अनुकूल राज्य के रूप में सुदृढ़ करता है। यह ध्यान रखना होगा कि सुशासन का दायरा केवल उद्योग और पूंजी तक सीमित नहीं रह

सकता। शहरी सेवाओं, ग्रामीण सड़कों, सिंचाई, स्वास्थ्य अवसरचना और शिकायत निवारण तंत्र को मजबूती देना इस मॉडल का महत्वपूर्ण सामाजिक आयाम है। यही वह बिंदु है, जहां विकास और न्याय दोनों समानांतर रूप से कार्य करते दिखाई देते हैं। यही संतुलन सुशासन को लोक कल्याण से जोड़ता है।

यह कहना जल्दबाजी होगी कि सारी चुनौतियां खत्म हो गई हैं। निवेश प्रस्तावों को वास्तविक रोजगार में बदलना, क्षेत्रीय असमानताओं को न्यूनतम करना और नदीकण्ठीय ऊर्जा और वेयरहाउसिंग, इन सभी क्षेत्रों में विस्तार यह दर्शाता है कि निवेश का लक्ष्य केवल आकड़ों की बढ़ोतरी नहीं, बल्कि उत्पादन, मूल्य संवर्धन और स्थानीय रोजगार सृजन है। परंतु युवाओं के लिए कोशल विकास और उद्योग के लिए नीति स्थिरता, यह संयोजन मध्य प्रदेश को निवेश, अनुकूल राज्य के रूप में सुदृढ़ करता है। यह ध्यान रखना होगा कि सुशासन का दायरा केवल उद्योग और पूंजी तक सीमित नहीं रह

## वीर बाल दिवस पर विशेष

## साहस, धैर्य और बलिदान की अमर गाथा साहिबजादे जोरावर सिंह और फतेह सिंह



निखिलेश महेश्वरी

आज का बालक धीरे-धीरे अपना धैर्य खोता जा रहा है। इसका परिणाम यह है कि समाज में आत्महत्या, अपराध और संवेदनहीनता जैसी प्रवृत्तियां बढ़ती जा रही हैं। दूसरों के प्रति सम्मान, आत्मगौरव तथा अपने धर्म के प्रति आस्था भी कम होती दिखाई दे रही है। जबकि वास्तव में बालक के भीतर साहस, धैर्य, आत्मगौरव, संवेदनशीलता और व्यवहार-कुशलता जैसे गुण स्वाभाविक रूप से विकसित होने चाहिए। यही गुण उसे अपने परिवार, समाज, राष्ट्र और धर्म के लिए कुछ करने में सक्षम बनाते हैं।

यदि हमें बालकों में इन गुणों का विकास करना है, तो उन्हें ऐसे महापुरुषों और वीर बालकों के जीवन-चरित्र सुनाने होंगे, जिनसे वे प्रेरणा प्राप्त कर सकें। उन्हें ऐसे गीत सिखाने होंगे जिन्हें वे अपने जीवन में उतार सकें। ऐसी पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना होगा जो सीधे उनके हृदय को स्पर्श करें। साथ ही, ऐसी फिल्मों से उनका परिचय करना होगा जिन्हें देखकर उनके भीतर आत्मगौरव और राष्ट्रीय भावना जागृत हो सकें।

मैं यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि प्रत्येक अभिभावक, शिक्षक और जिम्मेदार नागरिक अपने-अपने स्तर पर बच्चों में इन गुणों के विकास का प्रयास करेंगे तो ही ध्रुव, प्रह्लाद, हकीकत, भगतसिंह जैसे बालक तैयार होंगे। 26 दिसंबर को हमारे सामने ऐसा ही एक महत्वपूर्ण अवसर है, जो आत्मगौरव और बलिदान की भावना को जाग्रत करता है—यह अवसर है वीर बाल दिवस। संभव है कि अनेक बालकों को इसके विषय में पर्याप्त जानकारी न हो, इसलिए आइए, इस पावन अवसर के संदर्भ में हम सब मिलकर चर्चा करें और आने वाली पीढ़ी को उसके गौरवशाली इतिहास से परिचित कराएं। वर्ष 1699 में बैसाखी के पावन अवसर पर सिख धर्म के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी ने

खालसा पंथ की स्थापना की। उनके चारों पुत्र—साहिबजादे अजीत सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह—खालसा पंथ के अभिन्न अंग थे। खालसा पंथ की स्थापना का उद्देश्य मुगल शासन के अत्याचारों से समाज की रक्षा करना था, क्योंकि उस समय पंजाब पर मुगलों का प्रभुत्व था। खालसा पंथ के इस जनजागरण और संघर्ष को समाप्त करने के लिए मुगलों ने गुरु गोबिंद सिंह जी को पकड़ने हेतु अपनी पूरी शक्ति झोंक दी। इसी क्रम में 20 दिसंबर 1704 को कड़ाके की ठंड में मुगल सेना ने अचानक आनंदपुर साहिब के किले पर आक्रमण कर दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंह जी मुगलों को करारा उत्तर देना चाहते थे, किंतु उनके साथियों ने स्थिति को गंभीरता को समझते हुए वहां से निकलना ही उचित समझा। गुरु जी ने भी जयंती की सम्मति स्वीकार की और अपने पूरे परिवार के साथ आनंदपुर साहिब का किला छोड़कर प्रस्थान किया।

मार्ग में सरसा नदी का वेग अत्यंत तीव्र था। नदी के प्रचंड बहाव के कारण उसे पार करते समय गुरु गोबिंद सिंह जी का परिवार एक-दूसरे से बिछुड़ गया। यही वह क्षण था, जिसने आगे चलकर इतिहास को बलिदान की अमर गाथाओं से भर दिया। धर्म की रक्षा के लिए इससे बड़ा बलिदान और क्या हो सकता है। चमकौर में जब मुगलों के साथ युद्ध चल रहा था, तब गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने दोनों ज्येष्ठ पुत्रों—साहिबजादे बाबा अजीत सिंह जी और बाबा जुझार सिंह जी—को क्रमशः युद्धभूमि में भेजा। धर्म और सत्य की रक्षा के लिए उस्ताह, शौर्य और अदम्य साहस से परिपूर्ण इन वीर साहिबजादों ने मुगलों से वीरतापूर्वक युद्ध किया और अंततः रणभूमि में अपना सर्वोच्च बलिदान अर्पित कर अमर हो गए। दूसरी ओर माता गुजरी देवी अपने दो छोटे पुत्रों—साहिबजादे जोरावर सिंह और फतेह सिंह—तथा उनके रसोइए गंगू के साथ एक गुप्त स्थान पर शरण लेने को विवश हुईं। किंतु दुर्भाग्यवश, लालच में आकर गंगू ने माता गुजरी जी और उनके पुत्रों की सूचना मुगल अधिकारियों तक पहुंचा दिया।

अपने वीर बालकों के बलिदान पर श्री गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा था चार मुल तो क्या हुआ, जीवित कई हजार वर्ष 2022 में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने सिख पंथ के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के पावन अवसर पर उनके दोनों छोटे पुत्रों—साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह जी और बाबा फतेह सिंह जी—के अद्वितीय बलिदान को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए हर वर्ष 26 दिसंबर को 'वीर बाल दिवस' के रूप में मनाए जाने की घोषणा की। इस निर्णय के साथ उनके साहस, धर्मनिष्ठा और राष्ट्रभक्ति को चिरस्मरणीय बनाने हेतु इस दिवस को प्रतिवर्ष मनाने की परंपरा का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर देशभर में विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा गुरुद्वारों में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिनके माध्यम से बालकों और युवाओं को वीरता, त्याग और आत्मगौरव की प्रेरणा दी जाती है। यह दिवस हमें राष्ट्रीय एकता, धर्मनिष्ठा और त्याग का महान संदेश देता है।

## भारतीय संस्कृति के प्रतीक पंडित मदन मोहन मालवीय

प्रो. विवेकानंद तिवारी  
अध्यक्ष, आम्बेडकर पीठ  
एचपीयू, शिमला

अपने हृदय की महानता के कारण सम्पूर्ण भारतवर्ष में महामना के नाम से पूज्य मालवीयजी के संसार में सत्य, दया और न्याय पर आधारित सनातन धर्म सर्वाधिक प्रिय था। करुणामय हृदय, भूतानुकम्पा,

विश्वास ही उनके जीवन तथा कार्यपद्धति का मुख्य आधार था। वे ईश्वर भरोसे और धर्म के प्रति उनके मन में जन्मजात श्रद्धा थी। उन्होंने गंगा की अविरल धारा के लिए गंगा महासभा भी बनाई। उनके प्रयासों से 1916 में



बहुत बड़े पैरोंका थे। उन्होंने सामाजिक सुधार का लक्ष्य रखते हुए सनातन धर्म और हिंदू संस्कृति के लिए शक्तिशाली आंदोलन चलाया। उन्होंने इसमें जात-पात का भेदभाव नहीं किया और तीव्र विरोध का बावजूद कलकत्ता, काशी प्रयास और नासिक में

जीवन पवित्र, सत्य और उच्चजल होता है। धर्म पर चलने का उनका मुख्य कारण यही था। मालवीय जी के धार्मिक विचारों और धार्मिक कार्यों में भी समाज का हितचिंतन निहित था। उन्होंने गौरक्षा संघ की स्थापना भी की थी। वे सनातन धर्म सभा, हिन्दू महासभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन इत्यादि अनेक संस्थाओं के बहुमुखी नेता, संचालक और प्राण थे।

मालवीय को 'मुंडकोपनिषद्' की सूक्ति 'सत्यमेव जयते' को प्रचलित करने का श्रेय जाता है। बाद में इस सूक्ति को देश का राष्ट्रीय सूक्त वाक्य स्वीकार किया गया और देश के सरकारी प्रतीक चिन्हों के नीचे लिखा गया। काशी में महामना ने प्राचीन भारतीय शिक्षा के गौरवशाली मंदिर 'तक्षशिला' और 'नालंदा' को पुनर्जीवित करते हुए राष्ट्र निर्माण में भारतीय दृष्टि के अनुरूप शिक्षा की परिकल्पना को जीवित स्वरूप देते हुए वर्ष 1916 में काशी हिंदू विश्व विद्यालय की स्थापना के पीछे भारत की सनातन सहिष्णु संस्कृति, नैतिकता, धार्मिक मर्यादाओं, जीवन के मौलिक अनुशासन, कार्य के प्रति निष्ठा, दान-भिक्षा जैसे विराट भाव, विश्व भाईचारा, सभी को सुखी, सभी को निरामय रखने का उद्देश्य निहित है।

दिल्लों को धर्मोपदेश और मंत्र दीक्षा प्रदान की। 1880 में छात्र जीवन में ही उन्होंने 'हिंदू समाज' नामक संगठन की स्थापना कर दी थी। प्रयाग हिंदू सभा, भारत धर्म महामंडल और हिंदू महासभा के जरिये उन्होंने सनातन धर्म का प्रचार किया। हिंदू महासभा को कट्टर हिंदूवादी संगठन माना जाता था, लेकिन मालवीय इसके सबसे उदार सदस्य थे। तभी तो वे एक ही समय में हिंदू महासभा में भी थे और कांग्रेस में भी। एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के कारण वे अल्पसंख्यक धार्मिक विश्वासों थे। मालवीय जी ने असंख्य धार्मिक लेख लिखे, वे अंततः समाज के लिए ही थे। कल्याण नामक हिन्दू धार्मिक पत्रिका उनके धार्मिक विचारों का सर्वाधिक प्रतिनिधित्व करती है। वे भारतीय समाज को धर्ममय और आस्थामय देखना चाहते थे। धर्माधारित

मनुष्यमात्र में अद्वेष, शरीर, मन और वाणी के संयम, धर्म और देश के लिये सर्वस्व त्याग, उत्साह और धैर्य, नैराश्रयपूर्ण परिस्थितियों में भी आत्मविश्वासपूर्वक दूसरों को असम्भव प्रतीत होने वाले कर्मों का संपादन, वेशभूषा और आचार विचार में मालवीयजी भारतीय संस्कृति के प्रतीक तथा ऋषियों के प्राणवान स्मारक थे। सिर जाय तो जाय प्रभु! मेरो धर्म न जाय मालवीयजी का जीवन व्रत था जिससे उनका वैयक्तिक और सार्वजनिक जीवन समान रूप से प्रभावित था।

बचपन में जिन आचार विचारों का निर्माण हुआ उससे रेल में, जेल में तथा जलयान में कहीं पर भी प्रातस्सायं सन्ध्योपासना तथा श्रीमद्भागवत और महाभारत का स्वाध्याय उनके जीवन का अभिन्न अंग बना रहा। मालवीय जी का हिन्दू सभ्यता और संस्कृति के शाश्वत मूल्यों में अटूट विश्वास था और उनका यह

विश्वास ही उनके जीवन तथा कार्यपद्धति का मुख्य आधार था। वे ईश्वर भरोसे और धर्म के प्रति उनके मन में जन्मजात श्रद्धा थी। उन्होंने गंगा की अविरल धारा के लिए गंगा महासभा भी बनाई। उनके प्रयासों से 1916 में एक समझौता भी हुआ जिसे अविरल गंगा रक्षा समझौता कहा जाता है। महामना का गोरक्षा आन्दोलन धार्मिक, आर्थिक और स्वास्थ्य, तीनों कारणों से प्रेरित था। इसी का संपादन, वेशभूषा और आचार विचार में मालवीयजी भारतीय संस्कृति के प्रतीक तथा ऋषियों के प्राणवान स्मारक थे। सिर जाय तो जाय प्रभु! मेरो धर्म न जाय मालवीयजी का जीवन व्रत था जिससे उनका वैयक्तिक और सार्वजनिक जीवन समान रूप से प्रभावित था।

## क्या सचमुच नोटों से हटेंगे बापू !

कुछ ऐसे भी नेता होते हैं जो भविष्यवेत्ता होते हैं या उड़ती चिड़िया के पंख पहचानने का हुनर जानते हैं। सीपीएम सांसद जीन ब्रिटान ने दावा किया कि केंद्र की मोदी सरकार करंसी नोट से महात्मा गांधी की तस्वीर हटाने की तैयारी कर रही है। इस संबंध में एक उच्चस्तरीय बैठक 1162 100 हो चुकी है, जिसमें चर्चा का प्रारंभिक दौर हुआ है। ऐसा लगता है कि मनरेगा योजना से गांधी का नाम हटाकर उसे 'विकसित भारत जी-राम-जी' का नया नाम दिए जाने से सांसद जीन ब्रिटान को शक हो गया कि अब नोटों पर से भी बापू का मुस्कुराता चेहरा गायब कर दिया जाएगा। अब



डॉ. हेडगेवारया गुरु गोलवलकर का चित्र छापा जा सकता है। सच की शताब्दी से इसका संयोग बन सकता है। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर या बंकिमचंद्र चटर्जी की तस्वीर छापने से बंगाल के भद्रलोक खुश होंगे। यदि तिरुवल्लुवर या रामायामी परिवार की तस्वीर छापी तो तमिलनाडु की जनता प्रसन्न होगी। चुनाव पर नजर रखकर ऐसा किया जा सकता है। नोटों पर डॉ. आम्बेडकर का चित्र छापकर संविधान के प्रति गहरी आस्था जताई जा सकती है। कोई सवाल कर सकता है कि इतनी सारी विभूतियों के फोटो कैसे छप सकते हैं तो जवाब है कि अमेरिका में डॉलर के विभिन्न मूल्य वर्ग के नोटों पर (जिसे वहां बिल कहा जाता है) पूर्व राष्ट्रपतियों जॉर्ज वॉशिंगटन, लिंकन, जेफरसन व रुजवेल्ट की तस्वीर छपी रहती है। यहां भी 10, 20, 50 और 500 के नोट पर सरकार चाहे जिसकी तस्वीर छापने का निर्णय ले सकती है। वह दलील दे सकती है कि शराब की दुकानों व अनैतिक ठिकानों पर बापू का नोट जाने से उनकी आत्मा को पीड़ा होती होगी इसलिए उनका फोटो हटाया जा रहा है।

डॉलर के विभिन्न मूल्य वर्ग के नोटों पर (जिसे वहां बिल कहा जाता है) पूर्व राष्ट्रपतियों जॉर्ज वॉशिंगटन, लिंकन, जेफरसन व रुजवेल्ट की तस्वीर छपी रहती है। यहां भी 10, 20, 50 और 500 के नोट पर सरकार चाहे जिसकी तस्वीर छापने का निर्णय ले सकती है। वह दलील दे सकती है कि शराब की दुकानों व अनैतिक ठिकानों पर बापू का नोट जाने से उनकी आत्मा को पीड़ा होती होगी इसलिए उनका फोटो हटाया जा रहा है।

## संपादकीय बोर्ड

प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

## शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

## CROSS WORD 12122

-डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4	5
6		7		
	8			9 10
11			12	
13		14		
		15 16		17
18 19	20	21	22	
23			24	

यादगार वस्तु 2. मृत्यु के देवता, कौआ (सं.) 3. झरोखा, खिड़की (सं.) 4. दक्खिन, दक्षिण भारत 5. वह बात जो कही न जा सके, अवर्णनीय 8. जगमगाना, प्रकाशित होना, कीर्ति लाभकरना 10. कामदेव की पत्नी 11. देवता, सूर्य, स्वर, ध्वनि 12. मद्य, मदिरा (सं.) 13. पक्षियों का मधुर शब्द करना, उमंग में या प्रसन्न होकर अधिक बोलना 14. घर, मकान, सभा या अधिवेशन का स्थान (हाउस) (सं.) 16. सुंदर, प्रिय, रमने वाला विलास, क्रीड़ा (सं.) 17. करघे पर हाथों से कपड़ा तैयार करना 19. एक कृष्ण भक्त स्त्री जिसे विषपान करना पड़ा था 21. जूते आदि बनाने वाला कारीगर 22. प्रत्येक, एक-एक, नाश करने वाला

## Solution 12121

न	ख	ग	घ	ङ	च	ट	ड	ध	ढ	ण	त
र	र	र	र	र	र	र	र	र	र	र	र
श	र	म	र	म	क	ना					
	ज	म	ना	चो	टा						
ख	सा	ल	गि	र	ह						
ग	म	ला	ल	को	त						
दा	ह	चा	ट	क	ल						
द	ल	द	घा	त	क						

बाएँ से दाएँ  
1. भाग्यवाद (सं.) 5. आठ की संख्या, आठ (सं.) 6. संध्या, सूर्यास्त का समय (उर्दू) 7. कुछ जानने के लिए बार-बार ताकने या झाँकने की क्रिया, छिपकर देखने की क्रिया 8. चुनने का कार्य संचय (सं.) 9. तह, परत 11. पुष्प, सुहृदय (सं.) 12. उत्तम नीति, भक्त ध्रुव की माता का नाम (सं.) 13. आयुर्वेद के एक प्राचीन आचार्य या उनके द्वारा प्रणीत ग्रंथ, दूत (सं.) 14. यात्रियों के ठहरने का स्थान (उर्दू) 15. एक प्रसिद्ध देवर्षि 18. न्यूनता (उर्दू) 20. श्रीकृष्ण, मन को मोहने वाला 23. परमात्मा, विष्णु 24. विद्वान् करना, फाड़ना

ऊपर से नीचे  
1. किसी की याद करने वाला चिन्ह,

## ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

## आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारम्भ में मित्रों का सहयोग मिलेगा। वाहन सुख प्राप्त होगा। शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। वर्ष के मध्य में स्थान परिवर्तन का योग है। व्यवसाय में वृद्धि होगी। वर्ष के अन्त में पूर्व निर्धारित कार्यों में रुकावटें आंगेगी। व्यर्थ वाद विवाद एवं मानसिक अशांति रहेगी। योजनायें रूक सकती हैं।

मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को मित्रों का सहयोग मिलेगा। कर्क

राशि के व्यक्तियों के व्यवसाय में वृद्धि होगी। सिंह राशि के व्यक्तियों को रुकावटों के कारण योजनायें अपूर्ण रह सकती हैं। मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यों में रुकावटें आंगेगी। वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्थान परिवर्तन का योग है। धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा करना पड़ेगी। मकर और कुम्भ राशि के व्यक्तियों को मान-सम्मान प्राप्त होगा।

## आज जन्म शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक चंचल, दयालु, सहनशील, न्यायप्रिय, एवं कुछ क्रोध भी स्वाभाविक होगा, नौकरी में उच्च पद प्राप्त करेगा, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा, धार्मिक विचारों का होगा, ईश्वर के प्रति आस्था रहेगी, जन्म स्थान से दूर रहकर उन्नति करेगा।

## उत्पत्तिकालीन ग्रह चाल

8	के.7 सू.	6	5
9	चं.शु.	4	3
10	श.	4	3
11	1	2	3
12	श.	2	3

## पंचांग

रा.मि. 05 संवत् 2082 पौष शुक्ल षष्ठी भृगुवासरे दिन 10/0, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे रातअंत 5/44, सिद्धि योगे दिन 11/49, तैत्ति कर्णे सू.उ. 6/47, सू.अ. 5/13, चन्द्रचार कुम्भ रात 11/51 से मीन, शु.रा. 11,1,2,5,6,8 अ.रा. 12,3,4,7,9,10 शुभांक- 4,6,0.

## व्यापार भविष्य

पौष शुक्ल षष्ठी को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से चांदी, सोना, प्लेटिनम, के भाव में तेजी होगी, गुड्या खांडू, चीनी के भाव में उतार चढ़ाव का चाल रहेगी, व्यापारी बाजार का रूख देखकर कार्य करें। भाग्यांक 2212 है।

## SUDOKU 7254

	6	4	5	8					
9			1			7			
6	5		4			7	1		
	4						2		
1	2		6			9	8		
3			8					9	
	8	6		9	5				

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरें जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें। पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। पहली का केवल एक ही हल है।

नवभारत सू-दोके 7253

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1